आनन्द और आशा के तीर्थयात्री: डॉ० फा० मतियस डुंगडुंग, ये० स०

आनन्द और आशा के तीर्थयात्री शतकवीर डॉ० फा० मतियस डुंगडुंग, ये० स० की अंतिम यात्रा में उपस्थित हमारे महामान्यवर आर्चबिशप विंसेंट आइन्द, पुरोहित भाइयो, धर्मबन्धुओ, धर्मबहनें, माता-पिता, भाइयो-बहनो और बच्चे-बच्चियो।

संत पापा जोन पौल द्वितीय ने कहा था ***Your life will be the Gospel, some people will ever read.*** - **कुछ लोगों के लिए आपका जीवन ही सुसमाचार होगा जिसे वे पढ़ पायेंगे।** वाकई में फा० मतियस का जीवन एक सुसमाचार रहा। आज हम उसके जीवन पर अवलोकन कर अपने लिए कुछ जीवन-संदेश ग्रहण करें। उसके जीवन-दर्शन और उनके जीवन-मूल्यों पर मनन-चिंतन करें। सुन्दर सरल स्वभाव-वाले, विचारक, विद्वान व दार्शनिक फा० मतियस एक युग पुरूष रहे। सौ साल 42 दिनों का उनका जीवन मात्रा लम्बा जीवन नहीं, वरण आनन्दमय, आशामय, मधुर एवं यादगार तीर्थ था- **देश से विदेश और विदेश से स्वदेश तक का सुखद सफर।**

उसके जीवन पर अवलोकन करते हुए मैं आपके समझ पाँच विचारणीय बिन्दुओं पर अपन चिंतन रखना चाहूँगा।

1) 21 वर्षों का बाल्यकाल:

फा० मतियस का जन्म 12 जनवरी 1926 को कोनवीर नवाटोली में हुआ था। वह अपने माता-पिता का एकलौता बेटा था। उसकी एक बहन हैअब भी जीवित। उसके जन्म के पहले उसके एक और भाई था जिसकी मृत्यु जन्म के बाद कुछ दिनों बाद ही हो गयी। उसकी माँ ने एक विशेष मन्नत से मतियस को प्राप्त की थी। उसके पिता भारतीय सेना में थे जो प्रथम विश्व युद्ध के समय फ्रांस की सेना को साथ देने के लिए भेजे गये थे। युद्ध बाद वापस घर आने उसकी मृत्यु हो गयी जब फा० मतियस मात्र तीन वर्ष के थे। तब उसकी माँ ही उसके लिए सब कुछ थी - माँ की ममता भी और पिता की क्षमता भी। वह अपनी माँ मार्था का बेहद प्यारा था। मैंने उसे कई अवसरों पर कहते सुना था - **एक लड़के का सबसे प्यारा दोस्त उसकी माँ होती है।** ***"A boy's best friend is his mother!"*** उसने अपनी आरंभिक पढ़ाई उर्सुलाइन कॉन्वेंट नवाटोली से की। मध्य-विद्यालय की पढ़ाई संत जोसेफ मध्य विद्यालय नवाटोली से की। वह पढ़ाई में खूब अच्छे थे। उसे तीसरे क्लास से सरकारी स्कॉलरशिप प्राप्त थी। सांतवी कक्षा अच्छे अंकों में पास होने के बाद वह संत जोन्स राँची आ गये। 1940-1944 तक अपोस्तोलिक स्कूल राँची में रहकर हाई स्कूल और इंटर की पढ़ाई पूरी की। यहीं रहते समय उसे येसु समाजी फादर बनने की तीव्र लालसा हुई। उसने अपनी माँ को अपनी इच्छा जतायी। माँ तो चाहती थी कि वह कोई धर्मप्रांतीय पुरोहित बने। लेकिन बेटे की तीव्र लालास के सामने माँ को ही अपने लालसा त्यागनी पड़ी।

2) 13 वर्षों का गरिमामय येसु समाजी प्रशिक्षण काल:

21 जून 1947 को फा० मतियस, सीतागढ़ के नवशिष्यालय में दाखिला लेकर येसु समाज में प्रवेश किया। 13 वर्षों के लम्बे गरिमामय येसु समाजी प्रशिक्षण में वह कई जगहों और विद्वानों से जीवनोपयोगी उच्च शिक्षा और अनुभव प्राप्त किये। मनरेसा हाउस में रहकर संत जेवियर्स कालेज से उसने हिन्दी में प्रतिष्ठा की डिग्री प्राप्त की। तब वह दर्शनशास्त्र की पढ़ाई के लिए शम्बगनूर भेजे गये जहाँ उसे एक अंतरराष्ट्रीय समुदाय और गुरू मिले। शौर्य, दूराईराज, ऑगार्टे और साबरीमूथु जैसे दार्शनिक गुरुओं ने उसे अच्छे जीवन दर्शन का पाठ पढ़ाया। पालनी पर्वत मालाओं के बीच शांतिप्रियता और मुस्कानों के साथ उसने जीवन की गूढ़ रहस्यों पर चिंतन करने का मंत्र सीखा। तब वह भेजे गये लोयोला स्कूल कुनकुरी रीजेन्सी के लिये। 1956 में नवगठित राँची प्रोविंश के प्रथम प्रोविंशल ने उसे ईश-शास्त्र की पढ़ाई के लिए बेल्जियम के लूभेन शहर भेज दिया। तीर्थयात्री को पहली बार हवाई यात्रा करने का सौभाग्य भी मिला। उसका पुरोहिताभिषेक 10 अगस्त 1960 को हेभरले हुआ। नवअभिषिक्त पुरोहित के रूप में उसे चार महीने के लिए जर्मनी अवस्थित अस्फूनबर्ग नामक जगह में अमेरिकन सेना के कैम्प में चैपलिन के रूप में कार्य करने का मौका भी मिला। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद वह चले आये स्वदेश, मुंबई तक मैनचूरिन नामक पानी जहाज से और मुंबई से राँची रेल से। राँची आने के बाद 1961-1963 तक उसने राँची यूनिवर्सिटी राँची से एम०ए० की पढ़ाई की। उसने येसु समाज में अपना अंतिम प्रशिक्षण स्तानिस्लास सीतागढ़ से पूरी की।

3) 51 वर्षों का प्रेमपूर्ण समर्पित सेवा काल

येसु समाज और कलीसिया में फा० मतियस का प्रेमपूर्ण समर्पित सेवा काल 51 वर्षों का रहा। उसने लोयोला स्कूल कुनकुरी में अपना शिक्षण कार्य आरंभ की जहाँ उसन रीजेंसी की थी। एक साल बाद वह संत जेवियर्स राँची लाये गये, हिन्दी संकाय में हिन्दी प्रोफेसर के रूप में। अध्यापन कार्य के साथ-साथ उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी। अप्रैल 1976 उसने राँची यूनिर्वसिटी राँची से हिन्दी में पी०एच०डी० उपाधि प्राप्त कर ली। उसके शोधकार्य का विषय था - हिन्दी और खड़िया का तुलनात्मक अध्ययन। तदपश्चात, संत जेवियर्स कालेज में उसने 17 वर्षों की अपनी लम्बी सेवा की सौगात दीं। 1983-1985 में वह सीतागढ़ में नोविश मास्टर के सहायक रहे। करीब तीन वर्षों तक उसने वीर अल्बर्ट

एक्का कालेज चैनपुर में भी प्रभारी के रूप में अपनी प्रेमपूर्ण समर्पित सेवा दी। 1991 में वह माझाटोली पल्ली के सहायक पल्ली पुरोहित बने। 1992 में वह मनरेसा हाउस अवस्थित डा० कामिल बुल्के शोध संस्थान के निदेशक बने। यहाँ उसने 19 वर्षों तक अपने सेवाएँ दीं और लगभग 38 पी०एच०डी० शोधार्थियों को अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया। 11 जून 2011 वह शोध-संस्थान से सेवानिवृत हुए।

4) 14 वर्षों का प्रसन्नचित सेवानिवृत जीवनकाल

फा० मतियस का 14 वर्षों को सेवानिवृत जीवन मनरेसा हाइस के रूग्णालय में रहा। यहाँ रहते हुए उसने अंतिम सांस तक सारे लोगों अपना सारा आनन्द और आशा की कृपा बाँटी। वह बेहद मजेदार, जिन्दादिल इंसान थे। दूसरे बाल्यावस्था में वह प्रेम, आनन्द और आशा के जलते दीपक थे। उसे ठहाके लगाकर हँसते, गाते और नाचते हुए भी देखा गया। रोमांटिक हिन्दी गीत-संगीत, विद्वतापूर्ण हिन्दी शायरी और जीवन की ढेर सारी किस्सों के साथ उसका जीवनकाल 100 के पार पहुँच गया। उसने अपनी अंदाज में अपने जीवन को बखूबी जीया।

5) उसकी अनमोल कृतियाँ

आनन्द और आशा के तीर्थयात्री फा० मतियस ने अपने जीवन सानिध्य और विद्वतापूर्ण कृतियों से हजारों-लाखों को छू लिया है। वह सचमुच हिन्दी के पंडित थे। अपने गुरु डा० कामिल बुल्के के माफिक एक प्रकांड विद्वान - चलते-फिरते कामिल बुल्के हिन्दी शब्दकोश। हिन्दी साहित्य में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उसके नाम लगभग 36 किताबें (ज्यादातर अनुवादित) प्रकाशित हैं। सेवा की सौगात, सुबह के अधखिले फूल, संकल्प की सफलता, दूर थी मंजिलें आदि बेहद लोकप्रिय किताबें हैं। उनकी दो अंतिम कृतियाँ भी काफी चर्चित हुईं - **करूणा की किरणें** - येसु के पवित्रतम हृदय पर आधारित और **उजाले यादों के** - अपने जीवन और कार्यों का सुन्दर संस्मरण। 2015 में प्रकाशित अपने इस संस्मरण में वह अपने जीवन व कार्यों को सार बताते हैं। इसमें वह अपने पुराने यादों को स्मरण करते, पुनः जीते और अंत में मानों बोल उठते हैं - आमेन। राही (तीर्थयात्री) को अपनी मंजिल मिल चुकी हैं। प्रभु से मिली थी ये जिंदगी, प्रभु को ही पुनः समर्पित है ये जिंदगी।

उनकी अंतिम दो कृतियों में हम उनके जीवन-मूल्यों और जीवन-दर्शन की झलक पा सकते हैं। उजाले यादों के नामक संस्मरण को उसने दो भागों में बांटा है- देश से विदेश और विदेश से देश। यह किताब ही उसका जीवन है - देश से विदेश और विदेश से देश। उसका मूल-जीवन-दर्शन यह है कि स्वर्ग ही हमारा स्वदेश है। यह धरती विदेश। कुदरत का सुन्दर संदेश यही है कि - आप इस पृथ्वी पर मेहमान हो, मालिक नहीं। लाछनिक रूप में, हमारा जीवन एक तीर्थ है। यात्रा है। अनादि से अनंत तक। अंग्रजी में उनका प्यारा नारा था - ***Here hath dawned yet another blue day. From eternity it came and into eternity at night it shall return. Think, will you let it useless away***.

Our life is a journey. From eternity it has come and into eternity it has to return. That's our destiny. We are the citizens of heaven. To reach heaven is our destiny. In between we have only a delightful memories. स्वर्ग ही हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य है। वही हमारा मंजिल है। बाकी सब स्मृति-शेष रह जाती हैं।

अपने एक प्यारे शिष्य और पौत्र के रूप में फा० मतियस ने मुझे जीवन की दो गूढ़ बातें सिखायी है -

1) **जिन्दगी की खूबसूरती रिश्तों में है।** वह कहा करते थे - न किस्सों में, न हिस्सों में जिन्दगी की खूबसूरती तो है रिश्तों में। इन्हें बनाए रखिए।। लाइफ इज एन इन्टीग्रेशन ऑफ टाइम ऑभर हप्पीनेस - बर्थ ट डेथ। रिश्तों में खुशी तलाशिये।। इहलोक में और परलोक में।।
2) **मृत्यु जीवन का अंत नहीं, नए जीवन की शुरूआत है।** Death is not the end of life, it is only a bend!

मृत्य एक सरिता है, जिसमें
श्रम से कातर जीव नहाकर
फिर नूतन धारण करता है
काया रुपि वस्त्र बहाकर।।।

डा० फा० मतियस, आपने श्रम से थक कर मृत्यु रुपि सरिता में नहाकर और काया रुपि वस्त्र बहाकर स्वर्ग में नवीन रूप धारण कर लिया। आपने अपनी मंजिल प्राप्त कर लिया। आपने अपनी दौड़ पूरी कर ली है। आपको सादर नमन! रह जायेगी अब स्मृति-शेष, शायद दिवारों में, हमारे मानसपटल में और हमारे हृदय गुफाओं में।

इस मिस्सा-बलिदान में हम उस महान आत्मा डा० फा० मतियस डुंगडुंग के लिए ईश्वर का धन्यवाद करें और उसने सुन्दर प्रेरणादायी जीवन से प्रेरणा लें और अपने जीवनयात्रा को भी सुन्दर, सुखद और मंगलमय बनाने का प्रण करें।